क्या बुद्ध नास्तिक थे ?

आचार्य सत्यनारायण गोयन्का

क्या बुद्ध नास्तिक थे?

आचार्य श्री सत्यनारायण गोयन्का

क्या बुद्ध नास्तिक थे?

विषय-सूची

विपश्यना बनाम आस्तिकता ········ १
नास्तिकता का भय ········ ६
गीता की ऐतिहासिकता ········ १०
विपश्यना का व्यावहारिक और गीता का सैद्धांतिक पक्ष ········ १२
बुद्धवाणी का अध्ययन ········ १६
बुद्ध को नास्तिक नहीं कहा गया ········ १६
अंबष्ठ ब्राह्मण ········ १७
सुंदरिक भारद्वाज ········ १७
अग्गिक भारद्वाज ········ १८
मागंडिय ········ १८
संगारव माणव ········ १९
ब्राह्मणी धनंजानी का पति ········ २०
कौन थे नास्तिक? ········ २३
अजित केसकंबल का मत ········ २४
पूर्ण काश्यप का मत ········ २७
पकुध कात्यायन का मत ········ २९
मक्खलि गोसाल का मत ········ ३१
नास्तिकवादी आचार्यों के शिष्य ········ ३४
राजा पायासि ········ ३४
नास्तिकवादी वस्स और भञ्ञ ········ ३४
अनिश्चयवादी संजय वेलट्ठपुत्त का मत ········ ३५
आस्तिकवादी निगंठ नाटपुत्त (महावीर स्वामी) का मत ········ ३६
पाप-पुण्य ········ ३६
महावीर स्वामी के शिष्य ········ ३६
सिंह सेनापति *३७*
श्रेष्ठि उपालि. *३८*
अभय राजकुमार ········ ३९
उच्छेदवादी ········ ४०
बुद्धपूर्वकाल का नास्तिकवाद ········ ४१

वैदिक काल ४१
प्रमदक ४१
अनेक दार्शनिक ४१
श्रमण काल ४१
राजा ब्रह्मदत्तकालीन एक नास्तिक आचार्य ४१
आजीवक काश्यप ४२
भगवान बुद्ध द्वारा आस्तिकवादी सद्धर्म की स्थापना **४५**
नास्तिकवाद का विरोध **४७**
दान, शील और परलोक ४७
स्वच्छंद कामाचार का विरोध ४८
दो अतियों को छोड़ कर आर्य मध्यम मार्ग ४९
आस्तिकवादी मध्यम मार्ग **५१**
बुद्ध की प्रयोगात्मक विपश्यना विद्या **५५**
लोक और परलोक की मान्यता **६१**
कर्मानुकूल फल की मान्यता ६२
अन्य मिथ्या मान्यताओं का उन्मूलन ६३
विपश्यना का सक्रिय अभ्यास **६६**
भगवान बुद्ध का यथार्थवाद **७०**
भगवान मौन रहे ७१
भगवान बुद्ध यथार्थतः अनात्मवादी थे, निरीश्वरवादी थे ७२
अनात्मवादी बुद्ध ७४
पुनर्जन्म के नैसर्गिक नियम ७५
अनीश्वरवादी बुद्ध ७७
क्या ईश्वर पापी है? ७९
महाब्रह्मा ईश्वर बना ८०
बक ब्रह्मा ८१
महाब्रह्मा अनभिज्ञ ८२
कौन है संसार का निर्माता? ८४
मनुष्य स्वयं ही ईश्वर है **८६**
अनुभव पर आधारित यथाभूत सत्य **८९**
कर्मसंस्कारों का सृजन और भंजन ९०
भवमुक्ति कैसे होती है? ९२
कम्मविपाको अचिन्तेय्यो ९६
नास्तिक की परिभाषा का क्रमिक विकास **१००**

यास्क की व्याख्या ········ १००
नचिकेता ········ १०१
पुरातन श्रमणकालीन व्याख्या ········ १०१
बुद्धकालीन व्याख्या ········ १०१
पाणिनि की व्याख्या ········ १०२
पतंजलि की व्याख्या ········ १०२
काशिका की व्याख्या ········ १०२
प्रदीप टीका की व्याख्या ········ १०३
शिशुपालवध की व्याख्या ········ १०३
अमरकोश की व्याख्या ········ १०४
नास्तिको वेदनिन्दकः ········ १०७
वेदों में अहिंसा ········ ११०
महाभारत ने हिंसक यज्ञ को अस्वीकार्य किया ········ ११६
भगवान बुद्ध द्वारा हिंसक यज्ञों का निराकरण ········ १२२
कूटदंत ब्राह्मण ········ १२२
उद्गतशरीर ब्राह्मण ········ १२६
महाराज प्रसेनजित ········ १२६
सभी यज्ञ प्रशंसनीय नहीं हैं ········ १२७
वैदिक परंपरा में हिंसक यज्ञ की निंदा ········ १३०
वैदिक परंपरा के अन्य ग्रंथों में वेदों की भी निंदा ········ १३३
वेद प्रमाण न स्वीकारने के कारण नास्तिक ········ १३५
आत्मा और परमात्मा को नकारने के कारण नास्तिक ········ १३६
चातुर्वर्णी व्यवस्था ········ १३८
उत्कृष्ट आदर्श, निकृष्ट व्यवहार ········ १४४
शूद्रों की दुर्दशा ········ १४६
बुद्धवाणी के अनुसार चातुर्वर्णी व्यवस्था का उद्गम ········ १५७
क्षत्रिय का उद्गम १५७
ब्राह्मण का उद्गम १५७
वैश्य का उद्गम १५८
शूद्र का उद्गम १५८
गुण, कर्म, स्वभाव पर आधारित वर्ण-व्यवस्था १५८
अधःपतन १५९
धर्म की पुनर्स्थापना ········ १६०
हर व्यक्ति ब्राह्मण बन सकता है ········ १६२

ब्राह्मण १६२
ब्रह्मा के औरस पुत्र १६३
पड़ोसी देशों में केवल दो ही वर्ण १६३
अंगुलिमाल १६४
अंगणिक भारद्वाज १६५
अन्य वर्ण के लोग भी ब्राह्मण बने १६६
नारियां भी ब्राह्मण बनीं १६६
आर्य-अनार्य १६८
आर्य शब्द दूषित हुआ १७३
हर व्यक्ति आर्य बन सकता है १७४
दो पुरातन संस्कृतियों का पारस्परिक आदान-प्रदान १७७
वैदिक परंपरा प्रभावित हुई १७८
राजपुरोहित असित देवल १८१
ब्राह्मण ज्योतिषी १८२
अन्य प्रमुख ब्राह्मण १८३
वैदिक परंपरा पर विपश्यना का प्रभाव १८४
भगवद्गीता पर – १८४
बुद्धवाणी और भगवद्गीता – अरहंत और स्थितप्रज्ञ १८४
पातंजल योगसूत्र पर – १८७
'अविद्या': 'प्रज्ञा' के विपरीत स्थिति – १८९
चार उन्नत अवस्थाएं – १८९
योग के चार अंग – १९०
'संतोष' : परम सुख का अपूर्व स्रोत १९०
बुद्ध परंपरा प्रभावित हुई १९१
महाभिषक भगवान बुद्ध १९५
प्रेस विज्ञप्ति २०१
विपश्यनाः संक्षिप्त परिचय २०३
विपश्यना २०४
विपश्यना साहित्य २०५
विपश्यना केंद्र २१०

प्राक्कथन

मोटे रूप में 'आस्तिक' व्यक्ति वह होता है जो अस्तित्व को स्वीकार करे और 'नास्तिक' वह जो अस्तित्व को स्वीकार न करे। अब प्रश्न यही रहता है कि 'किसके' अस्तित्व की चर्चा है? पुस्तक के पर्यालोचन से स्पष्ट होगा कि वैदिक काल से लेकर अर्वाचीन काल तक इसी बिंदु को लेकर भिन्न-भिन्न प्रकार की अवस्थाएं पनपती रही हैं। इनमें से कुछ निम्न प्रकार से हैं: –

आत्मा, परमात्मा, कर्म-सिद्धांत के कारण पुनर्जन्म, परलोक, वेदों की प्रामाणिकता, यज्ञ का फल, इत्यादि।

छठी शताब्दी में 'अमरकोश' के प्रसिद्ध ग्रंथकार ने मिथ्यादृष्टि वाले को नास्तिक कहा है (*'मिथ्यादृष्टिकनास्तिकः'*)। भगवान बुद्ध ने अपने काल में प्रचलित बासठ प्रकार की मिथ्यादृष्टियों का उल्लेख किया है। (देखिए – *'दीघनिकाय- ब्रह्मजालसुत्त'*)।

अब नासमझी के कारण, अथवा द्वेषवश भी, किन्हीं को 'नास्तिक' कहने की प्रथा चल पड़ी। इसके ज्वलंत उदाहरण भगवान बुद्ध स्वयं हैं। कितने आश्चर्य की बात है कि जो बासठ प्रकार की मिथ्यादृष्टियों का दिग्दर्शन करा रहे थे, उन्हें स्वयं को 'नास्तिक' कह कर मिथ्यादृष्टिक बतलाया जा रहा है। इस मिथ्या लांछन का निराकरण इस पुस्तक के पर्यालोचन से हो जाता है।

इसे पढ़ कर पाठक स्वयं विचार करें कि 'नास्तिक' वस्तुतः किसे कहेंगे? और उस कथन का समाज पर क्या प्रभाव पड़ता है?

प्रकाशन मंडल,
विपश्यना विशोधन विन्यास,
धम्मगिरि, इगतपुरी.